Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ

काशी परिक्षेत्र में सम्पन्न होने वाली यात्राओं के महात्म्य का भौगोलिक विश्लेषण

डॉ बृजेश यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राष्ट्रीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जमुहाई, जौनपुर उ. प्र.।
अच्छेलाल प्रजापति
पीजीटी – भूगोल, राजकीयकृत +2 उच्चविद्यालय हरिनामांड, चैनपुर, पलामू, झारखण्ड।

Article Info

Article History
Accepted : 01 July 2024
Published : 15 July 2024

Publication Issue :
Volume 7, Issue 4
July-August-2024

Page Number : 17-32

शोधसारांश- प्रस्तुत शोध पत्र में काशी में आयोजित होने वाली यात्राओं के सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व को विशेष रूप से विश्लेषित किया गया है। इसमें यात्रा का परिचय, उद्देश्य, यात्रा की संकल्पना एवं प्रमुख यात्राओं पर प्रकाश डाला गया है । इस पत्र का मुख्य उद्देश्य काशी आने वाले यात्रियों की प्रवृति, आकर्षण, एवं उनके सम्मुख उत्पन्न होने वाली समस्याओं की गत्यात्मकता का अध्ययन करना है। इस शोध पत्र हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक अकड़ों का संग्रह साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है, जबकि द्वितीयक आँकड़ों को पुस्तकों एवं पत्रिकाओं से संग्रहित करके सारणी, ग्राफ एवं चक्रारेख के माध्यम से विश्लेषित किया गया है । काशी में तीर्थयात्रियों के आकर्षण हेतु मुख्यत: पंचक्रोशी यात्रा, चौरासीक्रोशी यात्रा, अंतर्गृही यात्रा एवं प्रदक्षिणा यात्राएँ हैं । इनमें से प्रदक्षिणा एवं अंतर्गृही यात्राओं का आयोजन प्रतिदिन या साप्ताहिक होता है जबकि पंचक्रोशी यात्रा एवं चौरासीक्रोशी यात्रा का आयोजन कुछ विशेष अवसरों जैसे महाशिवरात्री एवं सावन मास में होता है ।इन यात्राओं के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व का मूल्यांकन काशी की सांस्कृतिक विरासत के रूप में किया गया है तथा तीर्थयात्रियों के विचार का विश्लेषण करते हुए अन्त में निष्कर्ष लिखा गया है ।

संकेत शब्द : तीर्थस्थल, तीर्थयात्रा, तीर्थयात्री, अंत:संबंध, अंत:क्रिया।

तीर्थयात्राएं पर्यटन का अभिन्न अंग होती है तथा पर्यटन एवं भूगोल में घनिष्ठ संबंध है क्योंकि यह भूगोल की प्राचीनतम शाखा है, जिसमे पृथ्वी तल की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विविधताओं का अवलोकन क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक विधि से ज्ञानवर्धन, वातावरण परिवर्तन, आमोद–प्रमोद एवं स्वास्थ्य लाभ हेतु प्राप्त किए जाते है। तीर्थयात्रा मूलत: मानव का सबसे प्राचीन तथा मौलिक प्रवृत्ति रही है । भूगोल का उद्देश्य धरातलीय एवं मानवीय विभिन्नताओं का अध्ययन करना रहा है जबकि तीर्थाटन द्वारा इन्ही विभिन्नताओं का अध्ययन कर ज्ञान की वृद्धि एवं मनोरंजन, जलवायु परिदृश्य एवं सहगामी बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता को क्रमबद्ध करना है । भौगोलिक अध्ययन के अन्य पक्षों का भी संबंधतीर्थाटन से है जहां प्राकृतिक दृश्य, पर्वत,झील, जलवायु आदि भौतिक भूगोल के क्षेत्र हैं, वहीं संस्कृति, लोक कलाएं, रीति – रिवाज, परम्पराएँ, मंदिरों एवं

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

भवनों की मूर्ति कलाएं, उत्तखनन स्थलों से प्राप्त मूर्तियाँ एवं स्मारक आदि इसके सांस्कृतिक पक्ष है । मनोरंजनात्मक क्रियाएँ मनोरंजन भूगोल से, आधारभूत ढांचों का विकास आर्थिक भूगोल से तथा मानवीय पक्षों का व्यावहारिक अध्ययन व्यावहारिक भूगोल से संबन्धित है ।आज तीर्थाटन ने आर्थिक भूगोल में एक महत्त्वपूर्ण स्थान ले लिया है, जिससे कई देशों की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई है । तीर्थाटन विभिन्न क्षेत्रों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रोजगार का अवसर प्रदान करता है इसीलिए आज तीर्थाटन को उद्योग का दर्जा प्राप्त है। इसमें मुख्य रूप से कुशल एवं अकुशल श्रम की मांग अधिक रहती है।
अज्ञेयानन्द भारती ने तीर्थाटन को भारतीय समाज के रूपकात्मक एवं लाक्षणिक दृष्टि से संबोधित किया है (भारद्वाज, 2003)। इन तीर्थ यात्राओं को करने के संदर्भ भारतीय समाज के ऐतिहासिक क्रम विकास से आत्मसात किए गए मौलिक दर्शन एवं सिद्धांतों की बहुत महत्ता है, जिसके आधार पर कोई सभ्य समाज क्रियात्मक रूप से संचालित होता है। काशी सहित समस्त भारत में संचालित होने वाली यात्राओं के मूल में चार प्रमुख तत्व अवलोकित होते हैं, वे हैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

संस्कृत साहित्य में ऐसे भ्रमण के लिए तीन शब्द उल्लेखित है जो मूल शब्द "अटन" से लिया गया है जिसका अर्थ किसी स्थान के लिए प्रस्थान करना होता है।

- "पर्यटन" ज्ञान तथा आनंद के लिए बाहर जाना होता है।
- "देशाटन" मुख्य रूप से आर्थिक लाभ के लिए देश से बाहर जाना होता है ।
- "तीर्थाटन" धार्मिक महत्ता के स्थानों की यात्रा करना होता है।

तीर्थाटन को किसी राजनीतिक या प्राकृतिक सीमा से नहीं बाधा जा सकता है। एक भौगोलिक सीमा के अंतर्गत आने वाले तीर्थस्थलों के विकास के लिए सीमाएं निर्धारित की जा सकती है। तीर्थयात्रियों की रूची प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक सौंदर्य से भरे स्थलों को देखने की अधिक होती है। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए आवश्यक है कि तीर्थाटन स्थलों के विशिष्ट चरित्र को नष्ट न होने दिया जाए । तीर्थाटन सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। यह क्षेत्रीय विकास में सहायता करता है तथा सामाजिक, शिक्षा एवं बेहतर संबन्धों के माध्यम के रूप में भी कार्य करता है। तीर्थाटन के विभिन्न आयामों को यदि विकसित कर दिया जाए तो विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक महत्त्वपूर्ण साधन बन जाएगा । इस क्षेत्र में किया गया निवेश हर क्षेत्र में रोजगार सृजन का माध्यम है।

तीर्थ यात्राओं का विकास कब से हुआ है, इसका निश्चित समय निर्धारित नहीं किया जा सकता है क्योंकि मानव सभ्यता के विकास के साथ जब मानव प्राकृतिक वातावरण के साथ अन्त:क्रिया कर रहा था। तब विभिन्न प्राकृतिक परिघटनाओं जैसे दिन-रात का होना, नदियों का प्रवाहित होना, विभिन्न परकर की वनस्पतियों, स्थलाकृतियों एवं असंख्य जीव-जंतुओं के सम्पर्क में आया । अपने इस प्रारम्भिक अन्त:करण में मानव समुदाय इन तत्वों से प्रभावित होता है तथा प्रभावित करता भी है, जिसके फलस्वरूप वह एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाता है जिससे अनेक आस्था एवं विश्वास की प्रिष्ठभूमि तैयार होती है जो की तीर्थ यात्राओं के उद्भव के प्रारम्भिक बिन्दू माने जाते है । साहित्यिक अवलोकन करने पर इन तीर्थ यात्राओं का पहला प्रमाण ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है (मोतीचन्द्र, 2010) ।

तीर्थाटन का विकास मुख्यत: किसी क्षेत्र के पर्यटन संसाधन और उसके विभिन्नता पर निर्भर करता है कि वह कहाँ तक तीर्थयात्रियों को आकर्षित करने में सफल रहा है। किसी क्षेत्र में अगर तीर्थ स्थलों की विविधता के साथ रोचकता नही होगी तो तीर्थयात्री उस क्षेत्र के प्रति उदासीन हो जाएंगे । भौतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण सम्मिलित रूप से तीर्थयात्रीयों के लिए एक चुम्बक का कार्य करते है, जिससे तीर्थयात्री आकर्षित होकर उस स्थान की ओर चले आते है । तीर्थाटन एवं मनोरंजन के साधनों को दो भागों में बाट कर देखा जा सकता है -

1. भौतिक वातावरण

2. सामाजिक – सांस्कृतिक वातावरण

भौतिक वातावरण के अंतर्गत उन तथ्यों को विश्लेषित किया जाता है जो कि तीर्थाटन के लिए संसाधन का काम करते है जैसे प्राकृतिक दृश्य, जलवायु, पार्क एवं अभ्यारण, नदियों के तट, वनस्पति और स्थलाकृति आदि । सामाजिक – सांस्कृतिक पहलू तीर्थयात्रियों को आकर्षित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है । तीर्थाटन भी अन्य सामाजिक क्रियाओं की तरह एक सामाजिक क्रिया है । संस्कृति मानव के जन्म के साथ जुड़ी है । उसमें रक्त संबंध से ही पूर्वजों की सांस्कृतिक परम्पराओं का भाव भरा होता है, वह उसी के परिवेश में अपनी भौतिक क्रियाएँ करता है तथा उसके विचार इसके प्रभाव से जाने – अनजाने बनते है । यह मानव का आंतरिक पक्ष है, जबकि सभ्यता उसका बाह्य स्वरूप है । इसका संबंध वैचारिक पक्ष से होता है, जो सभी भौतिक क्रियाओं को प्रभावित करता है । इसी से प्रभावित होकर लोककला की कृतियाँ निर्मित होती है, धार्मिक भावनाएँ विकसित होती है तथा ऐतिहासिक पुरास्थलों की खुदाई से उनके संबंध में जानकारी प्राप्त होती है । पीटर (1969) ने तीर्थाटन को बढ़ावा देने वाले तत्वों का वर्णन किया है । सामाजिक – सांस्कृतिक वातावरण के अंतर्गत निम्न तथ्यों को विश्लेषित कर सकते हैं–

- धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व के स्थान,
- लोककलाएँ और परम्पराएँ तथा
- शैक्षणिक एवं वाणिज्यिक संस्थान ।

भूगोल तीर्थाटन के आकर्षण के लिए एक अभिव्यक्ति है। अवस्थिति, अभिगम्यता, वन, जलवायविक दशाएँ, वन्य जीव, ऐतिहासिक स्मारक, सांस्कृतिक आकृतियाँ आदि भौगोलिक अवयव तीर्थयात्रियों के संकेन्द्रण में सहायक होते है । इन सभी अवयवों की अनुपस्थिति में तीर्थाटन के विस्तृत आकर्षण प्रस्तुत नही कर सकते है ।तीर्थाटन मुख्यत: तीन तत्वों यथा मनुष्य, स्थान एवं समय से मिलकर पूर्ण होता है। ये सभी तत्व हमेशा तीर्थयात्रियों द्वारा तय की गई दूरी के अनुसार बदलते रहते है। इसी के साथ इससे जुड़ा दूसरा तत्व परिवहन है जिसे तीर्थयात्रियों द्वारा मेजबान क्षेत्र में ठहराव की अवधि के अनुसार प्रयोग किया जाता है, उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

उद्देश्य :– काशी की महत्त्वपूर्ण तीर्थयात्राओं के सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व का विश्लेषण करना तथा यहाँ आने वाले तीर्थयात्रियों की आस्था एवं विश्वास के कारकों के भौगोलिक विशेषताओं का वर्णन करना ।

अध्ययन क्षेत्र – काशी भारत के प्राचीनतम नगरों में से एक है जो गंगा के बाएँ तट पर अवस्थित है, मध्य गंगा के मैदान में स्थित काशी की भौगोलिक अवस्थिति $25^{0}15'$उत्तरी से $25^{0}22'$उत्तरी अक्षांश तथा $82^{0}\ 57'$ पूर्वी से $83^{0}03'$ पूर्वी देशांतर के मध्य है (टोपोसीट संख्या 63K/15 और 63O/3)। आधार तल से इसकी ऊँचाई 79 मी॒ है।काशी सापेक्षिक रूप से सड़क एवं रेल मार्ग से कोलकाता से 696 किमी॒, मुंबई से 1505किमी॒, दिल्ली से 797किमी॒, इलाहाबाद से 143किमी॒, गोरखपुर से 230किमी॒एवं राज्य की राजधानी लखनऊ से 301 किमी॒की दूरी पर अवस्थित है।

आकड़ा स्त्रोत एवं विधि तंत्र - प्रस्तुतअध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक आकड़ा स्रोतों का प्रयोग किया गया है । प्राथमिक आँकड़ों का संकलन क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा अध्ययन क्षेत्र काशी में अवस्थित तीर्थस्थलों के प्रत्यक्ष दृश्वयावलोकन एवं साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर किया गया है । अध्ययन में सोद्देश्य प्रतिचयन विधि के आधार पर काशी मेंआयोजित होने वाली पाँच यात्राओं का चयन किया गया है। इन तीर्थयात्राओं में सम्मिलित173 लोगोंका साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से साक्षात्कार किया गया है । द्वितीयक आँकड़ों का संकलन शोध पत्रिकाओं एवं विभिन्न पुस्तकों के माध्यमसे किया गया है। अध्ययन क्षेत्र

से सम्बंधित साहित्यालोकन करने पर हमें प्राचीन स्त्रोतों के माध्यम से वाराणसी के सम्बंध में महत्वपूर्ण जानकारियों और तथ्यों की जानकारी प्राप्त कर उनका उल्लेख करने का प्रयास किया गया हैं ।

काशी में सम्पन्न होने वाली प्रमुख यात्राएँ - काशी में गंगा नदी के पश्चिमी तट पर विभिन्न मन्दिरों एवं धार्मिक तीर्थ स्थलों का निर्माण भारत के विभिन्न भागों के राजाओं एवं क्षेत्रीय सामंतों द्वारा अट्ठारहवी से बीसवीं शताब्दी के मध्य कराया गया है (मोतिचन्द्र, 2010)। यहाँ पर गंगा के पश्चिमी तट पर बनी सीढ़ीदार आकृति जिसे घाट कहते है अविछिन्न रूप से उत्तर – दक्षिण विस्तृत है, का निर्माण विभिन्न ऐतिहासिक कालों में हुआ है । घाटों के पास का क्षेत्र विभिन्न पवित्र स्थलों एवं मन्दिरों के सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है । इन्हीं सांस्कृतिक स्थलों के साथ विभिन्न प्रकार की यात्राओं का भी प्रत्यक्ष संबंध जुड़ा हुआ है। काशी में सम्पन्न होने वली यात्राएं विभिन्न अवसरों पर विभिन्न अवधियों, दिनों, सप्ताहों, मासिक तथा वार्षिक आधार पर की जाती हैं, जिनका सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक महत्व होता है ।

काशी सम्पन्न होने वाली साप्ताहिक यात्राएँ किसी न किसी इष्ट देव को समर्पित होती हैं । काशी की संस्कृति मूलत: धार्मिक आधार पर विकसित हुई । इन्हीं मूल अधरों एवं भारतीय पंचांगों के समन्वय से सप्ताह के लगभग सभी दिवस को किसी न किसी इष्ट देव से जोड़ देखा जाता है और संबन्धित इष्ट के चतुर्दिक अंतर्गृही यात्रा आयोजित की जाती है ।इस प्रकार काशी में साप्ताहिक यात्राओं की कुल संख्या 23 हैं, जिनमें रविवार को सर्वाधिक सात यात्राएँ, मंगलवार को छ: यात्राएँ, सोमवार एवं शनिवार को तीन –तीन यात्राएँ, गुरुवार एवं शुक्रवार को दो – दो यात्राएँ जबकि बुधवार को कोई भी यात्रा सम्पन्न नहीं होती है (सुकुल, 2008)।

तालिका :1सप्ताह के दिवस विशेष पर सम्पन्न होने वाली काशी की अंतर्गृही यात्रा

क्र. सं.	दिवस	सम्पन्न होने वाली यात्रा
1.	रविवार	1– प्रत्येक दिन में लोलर्क यात्रा ।
		2– प्रत्येक दिन में अर्कविनायक यात्रा ।
		3– आदित्य यात्रा ।
		4– भैरव यात्रा ।
		5– पौष में उत्तरार्क यात्रा ।
		6– ज्येष्ठ में वृद्धिकल यात्रा ।
		7– चैत्र में साम्बादित्य यात्रा ।
2.	सोमवार	1– प्रत्येक सोमवार को चंद्रेश्वर यात्रा ।
		2– प्रत्येक सोमवार को करुणेश्वर यात्रा ।
		3– श्रावणमास में केदारेश्वर यात्रा ।
3.	मंगलवार	1– दुर्गा जी यात्रा ।
		2– हनुमान जी यात्रा ।
		3– मौनव्रती अमावस्या को केदारजी में श्राद्ध यात्रा ।

		4- भैरवजी की भौमाष्टमी परमपुनीत यात्रा ।
		5- यमतीर्थ तथा यमेश्वर की यात्रा चतुर्दशी तथा भरणी नक्षत्र में ।
		6- बंदी देवी यात्रा ।
4.	गुरुवार	1- गुरुपुष्ययांग में वृहपतिश्वर की यात्रा ।
		2- ज्ञानवापी यात्रा ।
5.	शुक्रवार	1- संकठाजी यात्रा ।
		2- शुक्रेश्वर यात्रा ।
6.	शनिवार	1- शनैश्चरेश्वर यात्रा ।
		2- शनिप्रदोश को कामेश्वर यात्रा ।
		3- शनिप्रदोश को चंद्रेश्वर यात्रा ।

स्त्रोत – उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग, वाराणसी.

दिनों की भाति मासिक यात्राओं का भी संबंध किसी न किसी इष्ट तथा तिथि विशेष से स्थापित किया गया है जिनका आयोजन मासिक आधार पर किया जाता है । काशी में माह की विशेष तिथि पर आयोजित होने वाली यात्राओं की कुल संख्या 33 जिनमें सबसे अधिक ग्यारह यात्राएँ अष्टमी को होती है जबकि षष्टि, सप्तमी एवं एकादशी तथा जिस माह सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण की घटना होती है को एक - एक यात्रा संपन्न होती है (सुकुल, 2008)। काशी में माह के आधार पर आयोजित होने वाली प्रमुख यात्राएँ निम्नलिखित सारणी में हैं ।

तालिका : 2माह की तिथि विशेष पर सम्पन्न होने वाली काशी की अंतर्गृही यात्रा

क्र. सं.	माह की तिथि विशेष	सम्पन्न होने वाली यात्रा
1.	चतुर्थी	1- ढूंढिराज यात्रा ।
		2- विनायक यात्रा ।
		3- भौमवार पड़ने पर अंगारेश्वर यात्रा ।
2.	षष्ठी	1- रविवार पड़ने पर आदित्य यात्रा ।
3.	सप्तमी	1- रविवार पड़ने पर आदित्य यात्रा ।
4.	अष्टमी	1- भैरव यात्रा ।
		2- दुर्गाजी यात्रा ।
		3- स्वप्नेश्वरी यात्रा ।
		4- चंडी यात्रा ।
		5- पिंगला यात्रा ।

		6- ईशानेश्वर यात्रा ।
		7- त्रिलोचन यात्रा ।
		8- मत्स्योदरी यात्रा ।
		9- ज्ञानवापी यात्रा ।
		10- मंगलवारीय अष्टमी की विशेष भैरव यात्रा ।
		11- सिद्धयोगेश्वरी यात्रा ।
5.	नवमी	1- चंडी यात्रा ।
		2- फुलस्तम्भ यात्रा ।
		3- व्यासपुरी यात्रा ।
6.	एकादशी	1- विष्णु यात्रा ।
7.	द्वादशी	1- काशीदेवी की यात्रा ललिताघाट पर यात्रा ।
		2- ज्ञानवापी पर एकादशी व्रत के उपरान्त यात्रा ।
8.	चतुर्दशी	1- ईशानेश्वर यात्रा ।
		2- सिद्धयोगेश्वरी यात्रा ।
		3- आत्मावीरेश्वर यात्रा ।
9.	पूर्णिमा	1- चंद्रेश्वर यात्रा ।
		2- भाद्रह्रद यात्रा भाद्रप्रदा नक्षत्र की पूर्णिमा पर ।
10.	अमावस्या	1- सोमवती अमावस्या चंद्रकूप की श्राद्ध यात्रा ।
		2- कपिलधारा एवं वृषभध्वज पर भी सोमवती अमावस्या चंद्रकूप की श्राद्ध यात्रा ।
		3- भौमवार पर केदारकुण्ड में श्राद्ध यात्रा ।
		4- गुरुवार के अवसर धर्मकूप में श्राद्ध यात्रा ।
11.	चंद्रग्रहण	1- दण्डखात की स्नान यात्रा ।
12.	सूर्यग्रहण	1- लोलर्क कुण्ड, कुरुक्षेत्र तालाब, सोनहटिया और दण्डखात की स्नान यात्रा ।

स्त्रोत - उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग, वाराणसी.

काशी की सांस्कृतिकविरासतों की अभिन्न अंग यहाँ की यात्राएं स्थानीय ही नहीं देश, विदेश से भी लोगों को आकर्षित करती हैं । इन यात्राओं में सम्मिलित होने लोग विशेष प्रकार से तैयारियाँ करते हैं और सम्मिलित होते है । काशी की इन वार्षिक यात्राओं का आयोजन प्रति वर्ष निर्धारित तिथियों के आधार पर किया जाता है । काशी की इन वार्षिक यात्राओं पर जलवायु की दशाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देता है । समजलवायु लोगों को तीर्थ यात्रा पर जाने हेतु प्रोत्साहित करती है

जबकि विषम जलवायु दशाओं में लोगों में कम उत्साह देखा जाता है ।काशी में संपन्न होने वाली वार्षिक यात्राओं में सबसे अधिक यात्राएँ चैत्र माह में 52 तथा सबसे कम पौस में एक होती है (सुकुल, 2008)।काशी मेंवार्षिक आधार पर आयोजित होने वाली प्रमुख यात्राएँ निम्नलिखित सारणी में हैं ।

तालिका :3वर्ष की तिथि विशेष पर सम्पन्न होने वाली काशी की अंतर्गृही यात्रा

क्र. सं.	माह का नाम	पक्ष का नाम	माह की तिथि	यात्रा संख्या	यात्रा का नाम
1-	चैत्र	कृष्ण पक्ष	1	1-	शैलेशादि चतुर्दिश लिंग यात्रा
				2-	योगिनी यात्रा
				3-	शैलेश्वर यात्रा
			2	1-	संगमेश्वर यात्रा
			3	1-	स्वर्लिनेश्वर यात्रा
			4	1-	मध्यमेश्वर यात्रा
				2-	ढुंढिराज यात्रा
			5	1-	हिरण्यगर्भेश्वर यात्रा
			6	1-	ईशानेश्वर यात्रा
			7	1-	गोप्रेक्षेश्वर यात्रा
			8	1-	वृषभध्वज यात्रा
			9	1-	उपशान्तशिव यात्रा
			10	1-	ज्येष्ठेश्वर यात्रा
			11	1-	निवासेश्वर यात्रा
			12	1-	शुक्रेश्वर यात्रा
			13	1-	व्याघ्रेश्वर यात्रा
				2-	कामेश्वर यात्रा
			14	1-	जम्बुकेश्वर यात्रा
				2-	केदारेश्वर यात्रा
		शुक्ल पक्ष	1	1-	शैलपुत्री दुर्गा यात्रा
				2-	मुखनिर्मालिका गौरी यात्रा
			2	1-	ब्रह्मचारिणी दुर्गा यात्रा
				2-	ज्येष्ठा गौरी यात्रा

			3	1–	चित्रघण्टा दुर्गा यात्रा
				2–	सौभाग्यगौरी यात्रा
				3–	नवगौरी यात्रा
				4–	मंगलगौरी यात्रा
				5–	विश्वभुजा यात्रा
				6–	आशाविनायक यात्रा
				7–	पर्वतीश्वर यात्रा
			4	1–	कुष्मांडागौरी यात्रा
				2–	शृंगारगौरी यात्रा
			5	1–	स्कन्दमाता यात्रा
				2–	विशालाक्षीगौरी यात्रा
			6	1–	कात्यायनी दुर्गा यात्रा
				2–	ललिता यात्रा
			7	1–	कालरात्रि दुर्गा यात्रा
				2–	भवानीगौरी यात्रा
			8	1–	महागौरी दुर्गा यात्रा
				2–	मंगलगौरी यात्रा
				3–	भवानी यात्रा
				4–	मध्यमेश्वर यात्रा
				5–	ज्येष्ठागौरी
				6–	महामुंडा देवी यात्रा
			9	1–	सिद्धिदात्री यात्रा
				2–	महालक्ष्मीगौरी यात्रा
				3–	रामचन्द्र यात्रा
			13	1–	कामेश्वर यात्रा
			14	1–	पशुपतीश्वर यात्रा
			15	1–	कृत्तिवासेश्वर यात्रा
				2–	चंदरेश्वर यात्रा
				3–	केदारेश्वर यात्रा

2–	वैशाख	कृष्ण पक्ष	1	1–	ओंकारेश्वरादि चतुर्दशायतन यात्रा
				2–	ओंकारेश्वर यात्रा
			2	1–	त्रिलोचन यात्रा
			3	1–	आदिमहादेव यात्रा
			4	1–	कृत्तिवासेश्वर यात्रा
			5	1–	रत्नेश्वर यात्रा
			6	1–	चंद्रेश्वर यात्रा
			7	1–	केदारेश्वर यात्रा
			8	1–	धर्मेश्वर यात्रा
				2–	पंचमुद्रा देवी यात्रा
			9	1–	आत्मावीरेश्वर यात्रा
			10	1–	कामेश्वर यात्रा
			11	1–	विश्वकर्मेश्वर यात्रा
			12	1–	मणिकर्णीश्वर यात्रा
			13	1–	अविमुक्तेश्वर यात्रा
			शनि संयुक्त	1–	कामेश्वर यात्रा
			14	1–	विश्ववेश्वर यात्रा
		शुक्ल पक्ष	3	1–	त्रिलोचन यात्रा
				2–	परशुरामेश्वर यात्रा
			14	1–	ओंकारेश्वर यात्रा
				2–	नृसिंह यात्रा
3–	ज्येष्ठ	कृष्ण पक्ष	1	1–	अमृतेश्वर यात्रा
				2–	अमृतेश्वरादि यात्रा
			2	1–	तारकेश्वर यात्रा
			3	1–	ज्ञानेश्वर यात्रा
			4	1–	करूणेश्वर यात्रा
			5	1–	मोक्षद्वारेश्वर यात्रा
			6	1–	स्वर्णद्वारेश्वर यात्रा

			7	1−	ब्रहमेश्वर यात्रा
			8	1−	लांगलीश्वर यात्रा
			9	1−	वृद्धकालेश्वर यात्रा
			10	1−	वृषेश्वर यात्रा
			11	1−	चंडीश्वर यात्रा
			12	1−	नंदीकेश्वर यात्रा
			13	1−	महेश्वर यात्रा
			14	1−	ज्योतिरुपेश्वर यात्रा
		शुक्ल पक्ष	1	1−	दशाश्वमेधेश्वर यात्रा
			8	1−	ज्येष्ठा गौरी यात्रा
			10	1−	गंगेश्वर तथा गंगाजी यात्रा
			14	1−	ज्येष्ठेश्वर यात्रा
				2−	ज्येष्ठविनायक यात्रा
4−	आषाढ़	शुक्ल पक्ष	2	1−	रथयात्रा यात्रा
			14	1−	आषाढ़ीश्वर यात्रा
			अमावस्या	1−	आषाढ़ीश्वर यात्रा
				2−	व्यासेश्वर यात्रा
				3−	विशिष्ट पंचतीर्थ यात्रा
5−	श्रावण	शुक्ल पक्ष	4	1−	ढूंढिराज यात्रा
			5	1−	वासुकीकुण्ड यात्रा
				2−	वासुकीनाथ यात्रा
				3−	वासुकीश्वर यात्रा
				4−	कंकोटक वापी यात्रा
			14	1−	आदिमहादेव यात्रा
6−	भाद्र	कृष्ण पक्ष	3	1−	विशालक्षी यात्रा
			8	1−	गंगातिरस्थ महालक्ष्मी यात्रा
		शुक्ल पक्ष	3	1−	मंगलागौरी यात्रा
			4	1−	ढूंढिराज यात्रा
			6	1−	लोलर्क यात्रा

			8	1-	महालक्ष्मी यात्रा
			12	1-	वरणासंगम यात्रा
			15	1-	कुलस्तम्भ यात्रा
				2-	अश्विनेयेश्वर यात्रा
7-	आश्विन	कृष्ण पक्ष	2	1-	ललितयात्रा यात्रा
			अमावस्या	1-	पितृकुण्ड यात्रा
		शुक्ल पक्ष	1 - 9	1-	विश्वभुजा गौरी यात्रा
				2-	नवदुर्गा यात्रा
				3-	दुर्गा यात्रा
				4-	चौसठ योगिनी यात्रा
			8	1-	भवानी यात्रा
				2-	महामुंडाचंडी गौरी यात्रा
				3-	छागेश्वरी यात्रा
8-	कार्तिक	कृष्ण पक्ष	14	1-	मानसरोवर यात्रा
		शुक्ल पक्ष	2	1-	यमेश्वर यात्रा
			8	1-	धर्मेश्वर यात्रा
			11	1-	बिन्दुमाधव यात्रा
			14	1-	विश्वेश्वर यात्रा
9-	मार्गशीर्ष	कृष्ण पक्ष	2	1-	दण्डपाणि यात्रा
			8	1-	कालभैरव यात्रा
		शुक्ल पक्ष	6	1-	मातलीश्वर यात्रा
				2-	लोलर्क यात्रा
			11	1-	कालमाधव यात्रा
				2-	पादोदक तीर्थ यात्रा
			14	1-	पिशाचमोचन यात्रा
			अमावस्या	1-	गोपीगोविन्द यात्रा
				2-	भृगुकेशव यात्रा
10-	पौष	शुक्ल पक्ष	अमावस्या	1-	नरनारायण यात्रा
11-	माघ	कृष्ण पक्ष	4	1-	वक्रतुंड यात्रा

			14	1-	अविमुक्तेश्वर यात्रा
				2-	कृत्तिवासेश्वर यात्रा
		शुक्ल पक्ष	4	1-	ढूंढिराज यात्रा
				2-	मुखप्रेक्षणिका यात्रा
			7	1-	लोलर्क यात्रा
				2-	केशवादित्य यात्रा
				3-	साम्बादित्य यात्रा
12-	फाल्गुन	कृष्ण पक्ष	14	1-	अविमुक्तेश्वर यात्रा
				2-	कृत्तिवासेश्वर यात्रा
				3-	प्रीतिकेश्वर यात्रा
				4-	रत्नेश्वर यात्रा
		शुक्ल पक्ष	अमावस्या	1-	दाल्भ्येश्वर यात्रा

स्त्रोत – उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग, वाराणसी.

काशी में कुछ ऐसी भी यात्राएँ आयोजित होती हैं जिनके आयोजन की कोई निश्चित तिथि निर्धारित नहीं होती है । ए अवसर जब भी आते हैं इनके आयोजन हो जाता है ।ऐसी प्रमुख यात्राएँ निम्न हैं ।

तालिका : 4वर्ष की कुछ अन्य विशेष अवसर पर सम्पन्न होने वाली काशी की अंतर्गृही यात्रा

क्र. सं.	**अन्य विशेष अवसर**	**यात्रा का नाम एवं विवरण**
1-	कर्क संक्रांति	शंखोद्वारतीर्थ
2-	अगस्त्योदय	अगस्त्यकुण्ड की यात्रा, यहीं पर अगस्त्य मुनि को अर्ध्यदान दिया जाता है ।
3-	सिंहस्थगुरु	गोदावरीकुण्ड की यात्रा
4-	माघ मास	रामनगर में पुन:स्थापित शिवलिंग की यात्रा जिसे बड़े वेदव्यास की संज्ञा भी दी जाती है ।

स्त्रोत – उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग, वाराणसी.

पंचक्रोशी यात्रा की शुरुआत तेरहवीं शताब्दी के आस – पास मानी जाती हैं, काशी के इतिहास में मूलचंद्र ने भी इस यात्रा के महत्व को स्वीकार किया है। इन्होंने बताया है कि प्रारंभिक समय में माघ मास में प्रयाग में स्नान संपन्न करने के पश्चात तीर्थयात्री काशी आते थे तथा अपने पितरों को श्राद्ध अर्पण करने के पश्चात पंचक्रोशी यात्रा भी करते थे, (मूलचन्द्र, 2010)।ग्रोवर एवं सिंह ने अपने लेखों में पंचक्रोशी यात्रा पर पड़ने वाले महत्वपूर्ण स्थलों की सूची तैयार की तथा बताया कि काल क्रमिक रूप से काशी में तीर्थ यात्रियों के आगमन के फलस्वरूप इस यात्रा के महात्म्य का भौगोलिक विस्तार बढ़ता

गया इस यात्रा का सर्वाधिक महत्व अधिवर्ष के अधिमास माह में होता है। प्रारंभिक अवस्था में यह यात्रा एकसे सातदिनों के मध्य संचालित होती थी लेकिन वर्तमान समय में इस यात्रा को पाँचदिन में संपन्न करने की प्रथा अधिक प्रचलित है। इस यात्रा में रात्रिकालीन विश्राम का भी प्रावधान है जो यात्री की इस मान्यता पर निर्भर करता है कि वह अपनी यात्रा कितने दिनों में संपन्न करता जाता है। एक दिन में सम्पन्न वाली इस यात्रा में रात्री कालीन विश्राम की कोई आवश्यकता नहीं होती है, जो यात्री दोदिन में इस यात्रा को करते हैं वह अपने रात्रिकालीन विश्राम हेतु वरुणा तट पररामेश्वर में रुकते हैं, जो यात्री इस यात्रा को तीनदिन में संपन्न करते हैं उनको दो रात रुकना पड़ता है ऐसे में उनका पहला पड़ा भीमचंडी तो दूसरा पड़ाव रामेश्वर में पड़ता है। जो यात्री इस यात्रा को चारदिन में संपन्न करते हैं उनके लिए तीन पड़ाव की आवश्यकता पड़ती है जो क्रमश: कर्दमेश्वर, भीमचंडी एवं रामेश्वरम में पड़ता है, तथा पाँच दिन की सर्वमान्य यात्रा करने वाले लोगों को चाररात्रिकालीन पड़ाव डालने की आवश्यकता होती हैं। एयात्री अपने यात्रा के दौरान पहले दिन कर्दमेश्वर महादेव, दूसरे दिन भीम चंडी में रुकते हैं, तीसरे दिन रामेश्वर तथा चौथे दिन की रात्रि कपिलधारा में बिताते हैं।

काशी की पंचक्रोशी यात्रा मार्ग पर कुल108 पवित्र तीर्थ स्थल हैं, जिनमें से 56 शिवलिंग से संबंधित हैं जो कि काशी की मुख्य आराध्य शिव के महात्म्य को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य स्थलों में कुछ देवी शक्ति, कुछ विनायक तो कुछ स्थानीय आराध्य को समर्पित स्थल हैं। इस पंचक्रोशीमार्ग पर स्थित पाँच प्रमुख पूज्यनीय स्थल कर्दमेश्वर, भीमचंडी, रामेश्वर, पाँच पांडव एवं कपिलधारा हैं तथा ए सभी स्थल मार्ग के दाहिने भाग में स्थित हैं

तालिका : 5 पंचक्रोशी मार्ग पर अवस्थित मंदिर

1- मणिकर्णिकेश्वर	28- नागनाथ	55- भैरव	82- देवसंघेश्वर
2- सिद्धि विनायक	29-चामुंडा	56- भैरवी देवी	83- पशुपति विनायक
3- गंगा केसव	30- मोक्षेश्वर	57- भूतनाथेश्वर	84- रथविश्वर
4- ललिता देवी	31- करुनेश्वर	58- सोमनाथेश्वर	85- स्वर्गभूमि
5- जरासंघेश्वर	32- विर्भाद्रेश्वर	59- सिंधुसरोवर तीर्थ	86- युप सरोवर
6- सोमेश्वर	33- विक्टाक्ष दुर्गा	60- कालानाथ	87- कपिलधारा
7- दलभेश्वर	34- उन्मत्त भैरव	61- कपर्दीस्वर	88- सभाध्वजेश्वर
8- सुलटनंकेश्वर	35- नील गना	62- कामेश्वर	89- ज्वालानरसिंह
9- वराहेश्वर	36- कालकूट गना	63- गनेस्वर	90- वरुणा संगम
10- दशाश्वमेधेश्वर	37- विमला दुर्गा	64- विभद्र गना	91- आदि केशव
11- बंदी देवी	38- महादेवेश्वर	65- कारुमुख गना	92- संगमेश्वर
12- सर्वेश्वर	39- नंदिकेश गना	66- गणनाथेश्वर	93- खर्व विनायक
13- केदारेश्वर	40- भ्रंगीरीति गना	67- देल्ही विनायक	94- प्रह्लादेश्वर

14- हनुमादेश्वर	41-गणप्रिया	68- सोदास विनायक	95- त्रिलोकनेश्वर
15- संगमेश्वर	42- विरूपाक्ष गना	69- उदण्ड विनायक	96-विन्दुमाधव
16- लोलार्क कुण्ड	43- यक्षेश्वर	70- उत्त्कालेश्वर	97- पंचगंगा
17- अर्क विनायक	44- विमलेश्वर	71- रुद्राणी देवी	98- गर्भतिश्वारा
18- दुर्गा कुण्ड	45- मोक्ष्देश्वर	72- तपोभूमि	99- मंगला गौरी
19- दुर्गविनायक	46- नंदेश्वर	73- वरुणा तीर्थ (नदी)	100- वसिष्ठेश्वर
20- दुर्गा देवी	47- अमर्तेश्वर	74- रामेश्वर	101- वामदेश्वर
21- विश्वक्षेनेश्वर	48- गन्धर्व सागर	75-सोमेश्वर	102- पर्वतेश्वर
22- कर्दमेश्वर	49- भीमचंडी	76- नहुसेश्वर	103- महेश्वर
23- कर्द्मा कुण्ड	50- कंद विनायक	77- देवभुमेश्वर	104- सिद्धि विनायक
24- कर्द्मा कूप	51- रविरक्षक गन्धर्व	78- भरतेश्वर	105- सप्तवर्ण विनायक
25- सोमनाथेश्वर	52- नरकार्णवात्र शिव	79- लक्ष्मणेश्वर	106- मणिकर्णिका घाट
26- विरूपाक्ष लिंग	53- एकपदगना	80- सत्रुघ्नेश्वर	107- मुक्ति मण्डप
27- नीलकंठेश्वर	54- महाभीमा	81- असंख्यतीर्थानि लिंगम	108- विशेश्वर

स्त्रोत – उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग, वाराणसी.

काशी में तीर्थ यात्रा पर आने वाले तीर्थयात्रियों के उद्देश्य एवं उनकी धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं तथा उनके धार्मिक क्रियाकलापों के अध्ययन हेतु के लिए प्राथमिक आकड़ा संग्रह एवं व्यक्तिगत संपर्क हेतु काशी के विभिन्न तीर्थ स्थलों पर उत्तरदाता के रूप में 173 लोगों का एक पंचदिवसीय सर्वेक्षण किया गया ।ये प्रमुख दिवस है – सामान्य रविवार, मकर संक्रान्ति, मौनी अमावस्या, वसंत पंचमी एवं महा शिवरात्रि ।इस सर्वेक्षण में हमनें 173 लोगों से सम्पर्क स्थापित किया और यह जानने का प्रयास किया कि वे कौन से कारक हैं जो तीर्थ यात्रियों आकर्षित करते है । काशी में तीर्थ यात्रियों आकर्षण का सबसे महत्वपूर्ण इसकी भौगोलिक स्थिति है जिसमें यहाँ का उच्चावच, जलवायु, परिवहन तंत्र, सामाजिक – संरचना एवं सांस्कृतिक समृद्धि है ।

तालिका : 6 काशी की किस यात्रा में सम्मिलित हुए

क्र. सं.	यात्रा का नाम	पर्यटकों/तीर्थयात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	पञ्चक्रोशी	84	48.6
2.	चौरासीक्रोशी	29	16.8
3.	अंतर्गृही	38	22.0
4.	प्रदक्षिणा	14	08.1
5.	अन्य	08	04.5

योग		173	100.0

स्त्रोत – प्राथमिक आँकड़ों के आधार पर परिगणित

काशी आने वाले तीर्थ यात्रियों ने पञ्चक्रोशी, चौरासीक्रोशी, अंतर्गृही एवं प्रदक्षिणा में भाग लिया, इनमें सबसे अधिक 84 लोगों ने पञ्चक्रोशी यात्रा में भाग लिया जो कि कुल तीर्थ यात्रियों का 48.6% है तथा सबसे कम लोगों अन्य तीर्थ यात्रा में सम्मिलित हुए जिनकी संख्या 08 है जो कि कुल तीर्थ यात्रियों का 04.5% हैं । चौरासीक्रोशी, अंतर्गृही एवं प्रदक्षिणामें सम्मिलित लोगों की संख्या क्रमशः 29 (16.8%), 38 (22.0%) तथा 14 (08.1%) है । काशी की प्रमुख धार्मिक तीर्थ यात्राओं में पञ्चक्रोशी यात्रा का महत्व सबसे अधिक है, साथ ही साथ लोग विभिन्न मान्यताओं से प्रेरित होकर भी संलग्न होते हैं ।

तालिका : 7 काशी में किस अवसर पर यात्रा में सम्मिलित हुए

क्र. सं.	अवसर	पर्यटकों/तीर्थयात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	प्रत्येक सोमवार	12	06.9
2.	महाशिवरात्रि	43	24.9
3.	मकरसंक्रांति	33	19.1
4.	सावन माह	37	21.4
5.	अन्य	48	27.7
योग		173	100.0

स्त्रोत – प्राथमिक आँकड़ों के आधार पर परिगणित

काशी की सांस्कृतिक विरासत इतनी समृद्ध है कि वर्षप्रयंत लोगों को आकर्षित करती रहती है इसकी स्पष्ट अवलोकन प्राथमिक सर्वेक्षण के दौरान भी देखा गया । प्राथमिक सर्वेक्षणके दौरान यह पाया गया सर्वाधिक तीर्थयात्री किसी विशेष अवसर पर नहीं अवलोकित हुए जिनकी संख्या 48 (27.7%) है । सबसे कम तीर्थयात्री एक विशेष सोमवार को मिले जिनकी संख्या 12 अर्थात 06.9% है । महाशिवरात्रि,मकरसंक्रांति एवं सावन माह मेंअवलोकित तीर्थ यात्राओं कि संख्या क्रमशः 43 (24.9%), 33 (19.1%) तथा 37 (21.4%) है । अतः हम कह सकते है कि काशी में आयोजित होने वाली यात्राएँ निरंतर चलती रहती है ।

तालिका : 8 काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा के किस स्थल ने सबसे आकर्षित किया

क्र. सं.	पञ्चक्रोशी स्थल	पर्यटकों/तीर्थयात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	खंडवा महादेव	35	41.7
2.	भीमचंडी	16	19.0
3.	रामेश्वरम	18	21.4
4.	पांचोंपाँडवा	07	08.3

5.	कपिलधारा	08	09.6
योग		84	100.0

स्त्रोत – प्राथमिक आँकड़ों के आधार पर परिगणित

काशी संस्कृति का प्रमुख आयाम यहाँ की पञ्चक्रोशी यात्रा भी है,प्राथमिक सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि सर्वाधिक तीर्थ यात्रियों ने इसी यात्रा में सहभागिता की, तत्पश्चात यह जानने का प्रयास किया गया कि पञ्चक्रोशी यात्रा का कौन सा स्थल सबसे ज्यादा लोगों को आकर्षित कर रहा है । पञ्चक्रोशी यात्रा में तीर्थ यात्रियों को सर्वाधिक आकर्षित करने वाला स्थल खंडवा महादेव यहाँ सबसे ज्यादा 35 (41.7%) लोग मिले तथा सबसे कम तीर्थ यात्रियों का संकेन्द्रण पांचों पाँडवा में दृष्टिगत हुआ यहाँ मात्र 07 (08.3%) लोगो का साक्षात्कार हुआ । भीमचंडी, रामेश्वरम एवं कपिलधारा में क्रमश: 16 (19.0%), 18 (21.4%) एवं 08 (09.6%) लोगो की उपस्थिती दर्ज की गई । अत: हम कह सकते हैं की पञ्चक्रोशी यात्रा का सर्व प्रमुख स्थल खंडवा महादेव है ।

निष्कर्ष : गंगा के मैदान में अवस्थित काशी की संस्कृति बहुत ही समृद्ध है, यहाँ की अन्य विरासतोंसे साथ – साथ तीर्थ यात्राओं का महत्व बहुत है । यहाँ के तीर्थ यात्राओं के विविध स्वरूप लोगों को आकर्षित करते है । काशी की यात्राओं से प्रभावित होकर लोग तीर्थ यात्रा पर आते हैं । आत्मिक शांति प्राप्त करते है तथा बहुत से जीवन मूल्यों को अपने साथ ले जाते हैं जिसका वहाँ जन साधारण के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है । काशी के स्थानीय लोग भी यहाँ आने लोगों के संपर्क में आने से उनके क्रियाकलापों से बहुत कुछ आत्मसात करते हैं । काशी की यात्राओं पर स्थानीय जलवायु का स्पष्ट प्रभाव देखा जाता यही कारण है कि वसंत कालीन चैत्र मास में काशी में सर्वाधिक यात्राओं का आयोजन होता है जबकि विषम कालीन पौस की अवधि के सबसे कम यात्री हैं । काशी की यात्राओं का यहाँ के स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, अपनी इन्हीं विशेषताओं से युक्त काशी की सांस्कृतिक एवं धार्मिक यात्राएँ मानव जीवन में प्रकाश पुंज का कार्य करती हैं ।

संदर्भ ग्रंथ

1. Bhardwaj, S. M. (2003). Hindu Places of Pilgrimage in India, MunasiramManoharlal Publishers, New Delhi, 110055.
2. Singh R. P.B. (2013). Hindu Tradition of Pilgrimage, Dev Publishers & Distributors, New Delhi.
3. मोतीचन्द्र, (2010). काशी का इतिहास, वाराणसी एलेक्ट्रोनिक कलर प्रिंटर्स, चौक वाराणसी, 221001
4. सुकुल, कुबेरनाथ. (2008). वाराणसी वैभव,शोभा प्रिंटिंग प्रैस, नया टोला, पटना, 4
5. तिवारी, रामचंद्र. 2015. भारत का भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन्स इलाहाबाद.
6. महाभारत, 2073 संo, गीताप्रेस गोरखपुर, 273005, (गोविन्दभवन – कार्यालय कोलकाता का संस्थान)
7. श्रीमद् भागवत महापुराण, 2073 संo, गीताप्रेस गोरखपुर, 273005, (गोविन्दभवन – कार्यालय कोलकाता का संस्थान)